सन्धि Contd.

Uma Pathak
B.A. Ist Yr.
Deptt. of Skt.

20. संयोगान्तस्य लोपः - 8|2|23

यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है कि संयोग के अन्त में आनेवाले पद का लोप हो जाता है।

21. अलोऽन्त्यस्य - 1|1|52

यह परिभाषा सूत्र है। सूत्र का अर्थ है कि षष्ठी से निर्दिष्ट अन्त्य अल् का (अइउण् . . . हल् = स्वर + व्यञ्जन) स्थानी आदेश होता है। यथा -

सुद्ध्युपास्यः - सुध्युपास्यः। मद्ध्वरि, मध्वरिः। धात्त्रंशः - धात्रंशः। लाकृतिः।

(क) सुद्ध्युपास्यः - सुधी + उपास्यः - इस सन्धिविच्छेद में 'इकोयणचि' से 'इ' के स्थान पर 'य' आदेश हुआ, 'अनचि च' से धातु का द्वित्व विकल्प से होता है। अतः सुध्ध्य + उपास्यः हुआ, 'झलां जश् झशि' से पहले 'ध' का 'द' आदेश होने पर 'संयोगान्तस्य लोपः' से सम्पूर्ण संयोगान्त का लोप होकर अन्तिम संयोग वर्ण 'य' को 'अलोऽन्त्यस्य' से प्राप्ति हुई। 'यणः प्रतिषेधो वाच्यः' वार्त्तिक से 'य' का लोप निषेध हो जाने पर सुद्ध्य् + उपास्यः = सुद्ध्युपास्यः रूप सिद्ध हुआ।

'अनचि च' से धकार का विकल्प से द्वित्व नहीं होने पर 'सुध्युपास्यः' रूप बनता है।

(ख) मद्ध्वरिः - मध्वरिः - मधु + अरिः - Same as सुद्ध्युपास्यः & सुध्युपास्यः

(ग) धात्वंशः – धात्रंश = धातृ + अंशः – Same as मद्ध्वरि & मध्वरिः।

(घ) लाकृतिः – लृ + आकृति ('लृ' की आकृति वाला अर्थात् कृष्ण। 'इको यणचि' से लृ के स्थान में ल् होने पर – ल् + आकृतिः – लाकृतिः पद बनता है।

वा० – यणः प्रतिषेधो वाच्यः – संयोगान्त पद के अन्तिम वर्ण यण् (य्, व्, र्, ल्) के लोप का निषेध हो जाता है।

(22) एचोऽयवायावः 6।1।78.
यह विधिसूत्र है। 'एच्' [ए, ऐ, ओ, औ – (एओङ् ऐऔच्)] के स्थान पर क्रमशः ए का अय्, ऐ – आय्, ओ – अव्, औ – आव् आदेश होता है, यदि वे स्वर वर्ण के बाद आते हैं तब।

23. यथासंख्यमनुदेशः समानाम – 1।3।10
यह परिभाषा सूत्र है। यह स्पष्ट करता है कि समान संख्यावाले – उद्देश्य और विधेय दोनों हों तो वहाँ आदेश क्रम के अनुसार होता है।
यथा (क) हरये – हरे + ए, 'एचोऽय...' से क्रमशः ए के स्थान में अय् आदेश होने पर – हर् + अय् + ए = हरये रूप सिद्ध हुआ।
(ख) विष्णवे – विष्णो + ए
(ग) नायकः – नै + अकः, पावकः – पौ + अकः
All are same as हरये।